जिगर गोशए रसूल ﷺ, शहजादीए दो-आ़लम ﷺ,
फख़्रे निस्वां, सरदारे ख़वातीने दो-जहां,
बिन्ते सरदारे अंबिया, बतूले अज़्रा

जनाब फ़ातिमह ज़हरा सलामुल्लाही अलय्हा अज़ीमुल मर्तबत बीबी

के बारे में अहले सुन्नत के जलीलुल क़द्र
उ़लमा का ख़िराजे अक़ीदत

मुरत्तिब
खुसरो क़ासिम

हिन्दी रसमुलखत
डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

जिगर गोशए रसूल ﷺ, शहजादीए दो-आ़लम ﷺ,
फख़्रे निस्वां, सरदारे ख़वातीने दो-जहां,
बिन्ते सरदारे अंबिया, बतूले अज़्रा

जनाब फ़ाति़मह ज़हरा सलामुल्लाही अलय्हा अज़ीमुल मर्तबत बीबी

के बारे में अहले सुन्नत के जलीलुल क़द्र
उ़लमा का ख़िराजे अक़ीदत

मुरत्तिब
ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी
डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम : जनाब फ़ातिमा ज़हरा ﷺ
अज़ीमुल मर्तबत बीबी

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डो. शेहज़ाद हुसैन क़ाज़ी
फाउन्डर एन्ड चेरमेन
ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),
मोडासा, गुजरात, इन्डिया

सफहात : 28

सन इशाअत : फरवरी, 2019 (हिजरी 1440, 20 जमादिल आख़िर)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),
मोडासा, गुजरात, इन्डिया

हदिया : इसाले सवाब तमाम उम्मते रसूलल्लाह ﷺ
व
मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमीयां चौहाण

मिलने का पता

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन
मोडासा, गुजरात, इन्डिया
डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी
Contact No : 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है। अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"जनाब फ़ातिमह ज़हरा सलामुल्लाही अलय्हा अज़ीमुल मर्तबत बीबी"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार, ख़ास कर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो। ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरो पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा को इमाम नफ्सुसझकिया की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया। एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अह्ले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए। कहीं हबीब इब्न मुजाहिर और हुर्र बनाकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई, इमाम हाकिम, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हनीफा, इमाम शाफीई बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख़्वाजा गरीब नवाज, निजामुद्दीन औलिया, वारिसे पाक, मख़्दुम माहिम और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त बनकर आए। वक्तन फ वक्तन हर मैदान में गुलामानें अह्ले बैत नासबियत व ख़ारजियत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे।

इस ज़माने में भी नासबियत और ख़ारजियत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबियत की डोर कल सल्तनत के बादशाहो ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रख़कर लोगों से फजाइले अह्ले बैत छुपाकर, बुग्ज़े अह्ले बैत को आम करवा रहे थे वो ही

नासबियत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फज़ाइले अहले बैत ﷺ छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को खुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अहले बैत ﷺ नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आन व अहले बैत ﷺ से दूर किया जा रहा है। कुर्आन के तर्जुमा व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अहले बैत ﷺ पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलल्लाह ﷺ का कौल साबित है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने फरमाया :

"मैं जिसका मौला हूँ अली ؑ भी उसके मौला है"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी) (कश्फुल अस्तार, लि-हैसमी) (रावी सिक्का)

मुख़्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अहले बैत ﷺ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज पर आकर मुझ से मिले।"

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؑ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अहले बैत ﷺ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है। आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अहले बैत ﷺ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अहले बैत ﷺ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबा-ए-किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है। मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को लम्बा नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है। अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

इस छोटे से रिसाले में अहले बैत ﷺ, अहले मुबाहिला ﷺ की वो शख़्सियत, नबी ﷺ की बेटी, वसी की ज़ौजा, सिब्तैन की माँ, इमामों की दादी, यौम-ए-जज़ा में अर्श के सामने फरियाद करनेवाली, आख़िरत और दुनिया की औरतों की सरदार, अली मुर्तजा ؑ की अहलिया, मुन्तख़ब

शख़्स की माँ, मुस्तफा की साहबज़ादी, जिसकी तारीफ इन्जील में की गई, मरियम ﷺ के हमपल्ला, हर ख़ैर का इल्म रखनेवाली, सबसे मुकर्रम मुहम्मद ﷺ की बेटी, साहिब-ए-वही व कुर्आन का मोती, जिसके दादा ख़लील, सय्यिदा, तय्यिबा, ताहिरा, बतूल, फ़ातिमा ज़हरा ﷺ की शान बयान करने की काविश की गई है।

अब ऐसे लोगों को चाहिये की वो अपनी इस्लाह करे और अहले बैत की गुस्ताख़ी करने से परहेज़ करे। सय्यिदा ज़हरा-ए-पाक ﷺ की शान को ख़ुदा ने एसी बलन्द की है कि हम जैसे गुनहगार, ख़ताकार, कमअक़्ल इन्सानो की हैसियत ही नहीं की हम उनकी शान बयान करे कि जिनके बारे में **हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ फरमाते है :**

"कयामत के दिन एक निदा देनेवाला पर्दे के पीछे से आवाज देगा। ए अहल-ए-महशर। अपनी निगाहें झुका लो ताकि फातिमा बिन्ते मुस्तफा ﷺ गुज़र जाए।"

(मुस्तदरक हाकिम रकम 4728) (असद-उल-गाबा, जिल्द-7, सफा-220)

अल्लाह ﷻ हमको, हमारी ता-कयामत तक की नस्लों को सय्यिदा फातिमा ज़हरा ﷺ के बच्चों की गुलामी अता करे. आमीन...

अल्लाह ﷻ रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है कि मेरी इस काविश को कुबूल फरमाये और मेरी इस किताब के प्रकाशन का सवाब तमाम उम्मते रसूलल्लाह ﷺ के मोमिन व मोमिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझमें बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत ﷺ शिखायी, उनकी रुह को अता फरमाये और उनकी मग़फिरत फरमाये, सय्यिदा जहरा-ए-पाक ﷺ के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहरा-ए-पाक की कनीज़ो में शुमार करें। आमीन....

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीब-ए-अह्ले बैत ﷺ मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अह्ले बैत ﷺ की शफाअत नसीब फरमाए !

डॉ. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी
20 जमादील आख़िर, हिजरी 1440

بسم الله الرحمن الرحيم

जिगर गोशा-ए-रसूल ﷺ, शहज़ादी-ए-दो आलम ﷺ, फख़्र-ए-निसवाँ, सरदार-ए-ख़वातीन-ए-दो जहाँ, बिंत-ए-सरदार-ए-अंबिया बुतूल, अज़्रा जनाब फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाही अलयह अज़ीम अल-मर्तबत बीबी के बारे में अहले सुन्नत के जलीलुल क़द्र उलमा का ख़िराजे अक़ीदत

इमाम अहमद इब्ने हम्बल رحمة الله

अहले सुन्नत के चार मशहूर तरीन अहले मज़ाहिब में से एक और हदीष के बहुत बड़े इमाम अहमद इब्ने हम्बल رحمة الله ने अपनी मुसनद की तीसरी जिल्द में अपनी ख़ास इसनाद के ज़रिये से ख़ादिमे रसूल ﷺ मालिक बिन अनस رضي الله عنه से रिवायत की है : रसूलुल्लाह ﷺ छेह माह तक हर रोज़ नमाज़े सुबह के लिए जाते हुए हज़रत फ़ातिमा عليها السلام के घर के पास से गुज़रते और फ़रमाते: **'नमाज़ ! नमाज़ ! ऐ अहले बैत !'** इसके बाद आप फिर इस आयात की तिलावत फ़रमाते :

﴿إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس اهل البيت و يطهر كم تطهيرا﴾

"ऐ अहले बैत ! अल्लाह ﷻ का तो बस यही इरादा है कि तुम्हें हर नापाकी से दूर रखे और तुम्हें ख़ूब पाक और पाकीज़ा रखे ।"

इमाम बुख़ारी رحمة الله

हदीष के मारुफ़ इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इसमाईल बुख़ारी رحمة الله अपनी सहीह के बाब फ़ज़ाइल-ए-सहाबा رضي الله عنهم में अपनी इसनाद से नक़ल करते हैं कि रसूले इस्लाम ﷺ ने **'फ़रमाया कि फ़ातिमा عليها السلام मेरा पारा-ए-तन है, जिसने उसे ग़ज़ब नाक किया उसने मुझे ग़ज़ब नाक किया ।'**

इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब में मुतअद्दिद मक़ामात पर रसूलुल्लाह का यह फरमान नक़ल किया है: 'फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उसे ग़ज़ब नाक किया उसने मुझे नाराज़ किया। (जिल्द 6) पाँचवी जिल्द में उन्हों ने आँ हज़रत का यह फ़रमान भी नक़ल किया है:

الفاطمة سيدة نساء اهلِ الجنة

"सय्यिदा फ़ातिमा जन्नत की औरतों की सरदार हैं"

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज

सिहाह सित्ता में से दूसरी अहम किताब सहीह मुस्लिम समझी जाती है। इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज अपनी इस सहीह में कहते हैं :

"फ़ातिमा रसूल के जिस्म का टुकड़ा है, जो उन्हें रंजीदा करता है वह रसूलुल्लाह को रंजीदा करता है और जो उन्हें ख़ुश करता है वह रसूलुल्लाह को ख़ुश करता है ।

इमाम तिरमिज़ी

इमाम तिरमिज़ी की सुनन भी सिहाह सित्ता में शामिल है । वह नक़ल करते हैं: हज़रत आयशा से सवाल किया गया कि 'लोगों में से रसूलुल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब कौन था ?' **उन्हों ने जवाब दिया: फ़ातिमा । फिर पूछा गया: मर्दों में से ? कहने लगीं: उनके शौहर अली ।**

अल्लामा ख़तीब बग़दादी

अहमद बिन अली अल मारूफ़ ख़ातीब बग़दादी पाँचवी सदी के मुअर्रिख़ और मुहक़्क़िक़ हैं। **'तारीख़े बग़दाद'** और **मदीनतुल इस्लाम** उन की मशहूर किताब है। इस में वह हुसैन बिन मआज़ के बारे में गुफ़्तुगू करते हुए अपनी इसनाद के ज़रिये हज़रत आयशा से नक़ल करते हैं कि

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: **रोज़े महशर बरपा होगा कि एक आवाज़ आएगी: ऐ लोगों! अपनी नज़रें नीची कर लो ताकि फ़ातिमा बिंते मुहम्मद ؑ गुज़र जाएँ।** एक और रिवायत में वह नक़ल करते हैं: **एक पुकारने वाला रोज़े महशर निदा देगा: अपनी आँखों को बंद कर लो ताकि फ़ातिमा बिंते मुहम्मद ؑ गुज़र जाएँ।**

अल्लामा कंदोज़ी रحمة الله

अल्लामा सुलेमान कंदोज़ी رحمة الله अपनी किताब यना बिउल मवद्दा में अपनी इसनाद से अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत करते हैं: **नमाज़े फ़ज्र के वक़्त हर रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत फ़ातिमा ؑ के घर के दरवाए पर आते और घर वालों को नमाज़ के लिए पुकारते और यह आयत तिलावत फ़रमाते:**

﴿انمايريدالله ليذهب عنكم الرجس اهل البيت ويطهر كم تطهيرا﴾

और यह सिलसिला नौ माह तक जारी रहा। (सतूरे बाला में मज़कूर एक रिवायत में छह माह आया है)। अल्लामा कंदोज़ी رحمة الله यह रिवायत दर्ज करने के बाद लिखते हैं: यह ख़बर तीन सौ सहाबा से रिवायत हुई है।

इमाम अबू दाऊद رحمة الله

अबू दाऊद सुलेमान बिन तयालिसी رحمة الله की किताब हदीस की क़दीम और अहम तरीन किताबों में से शुमार होती है। वह नक़ल करते हैं: अली इब्ने अबी तालिब ؑ ने फ़रमाया: क्या तुम नहीं चाहते कि मैं अपने बारे में और फ़ातिमा ؑ बिंते रसूल ﷺ के बारे में कुछ कहूँ? फिर हज़रत अली ؑ फ़रमाने लगे: वह अगरचे रसूलुल्लाह ﷺ को सबसे ज़्यादा अज़ीज़ थीं ताहम मेरे घर में चक्की ज़्यादा पीसने की वजह से उन का हांथ ज़ख़्मी हो गया था, पानी ज़्यादा उठाने की वजह से आप के कंधे पर भी वरम आ गया था और झाड़ू देने और घर की सफ़ाई की वजह से उन का लिबास बोसीदा हो गया था। हम ने सुना कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास कुछ ख़ादिमाएँ हैं। फ़ातिमा ؑ अपने बाबा जान के

पास गईं ताकि उन से कुछ मदद तलब करें और आँ हज़रत ﷺ से घर में मदद के लिए कोई ख़ादिमा मांग लें, लेकिन जब अपने बाबा जान के पास पहुँचीं तो उन्हों ने वहाँ चंद जवानों को देखा। उन्हें बहुत हया आई कि अपनी दरख़्वास्त बयान करें। वह कुछ कहे बगैर लौट आईं।

(सुनन अबी दाऊद जिल्द 2)

इमाम हाकिम नेशापुरी رحمة الله عليه

मुसतादरक अल-सहीहैन इमाम हाकिम नेशापुरी رحمة الله عليه की मशहूर किताब है। वह इस में नक़ल करते हैं: **रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने मर्ज़े मौत में हज़रत फ़ातिमा عليها السلام से फ़रमाया: बेटी! क्या तुम नहीं चाहती कि उम्मते इस्लाम और तमाम आलम की औरतों की सरदार बनो ?**

इमाम फ़ख़्र राज़ी رحمة الله عليه

इमाम फख़्रुद्दीन राज़ी رحمة الله عليه ने अपनी **तफ़सीर कबीर** में सूरह-ए-कौसर के ज़ैल में इस सूरह मुबारका के बारे में मुताअद्दिद वजूह बयान की हैं। उन में से एक यह है की कौसर से मुराद आले रसूल ﷺ है। वह कहते हैं: यह सूरत रसूले इस्लाम ﷺ के दुश्मनों के तोन व ऐब जूई को रद्द करने के लिए नाज़िल हुई। वह आपको अबतर यानी बे औलाद, जिस की याद बाक़ी न रहे और मक़तूअ अल-नस्ल कहते थे। इस सूरत का मक़सद यह है कि अल्लाह ताला आँ हज़रत ﷺ को ऐसी बा बरकत नस्ल अता करेगा कि जमाने गुज़र जाएंगे लेकिन वह बाक़ी रहेगी। देखें कि ख़ानदाने अहले बैत में से किस क़दर अफ़राद क़त्ल हुए हैं लेकिन फिर भी दुनिया खानदाने रिसालत और आप ﷺ की औलाद से भरी हुई है जब कि बनी उमय्या की तादाद कितनी ज़्यादा थी लेकिन आज उन में से कोई क़ाबिले ज़िक्र शख़्स वजूद नहीं रखता। इधर इन (औलादे रसूल) की तरफ देखें, बाक़र عليه السلام, सादिक़ عليه السلام, काज़िम عليه السلام, रज़ा عليه السلام वग़ैरा जैसे कैसे कैसे अहले इल्म व दानिश ख़ानदान रिसालत में बाक़ी हैं।

(तफ़सीर फख़्रुद्दीन राज़ी رحمة الله عليه, जिल्द 23, सफ़हा 441 मत्बुआ बहिया, मिस्र)

अल्लामा इब्ने अबी अल-हदीद

अब्दुल हमीद इब्ने अबी अल-हदीद मरुफ़ मोअतज़ली आलिम और नहजुलबलाग़ा के शारेह हैं, वह लिखते हैं: रसूलुल्लाह लोगों के गुमान से ज़्यादा और लोग अपनी बेटियों का जितना एहतराम करते थे उस से ज़्यादा हज़रत फ़ातिमा की इज़्ज़त करते थे, यहाँ तक कि आबा को अपनी औलाद से जो मुहब्बत होती है रसूलुल्लाह की हज़रत फ़ातिमा से मुहब्बत उस से कहीं ज़्यादा थी। आप ने एक मर्तबा नहीं बल्कि बार बार, मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर और मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में, आम व ख़ास की मौजूदगी में फ़रमाया :

اِنهاسیدة نِساءِ العالمِین و اِنها عدیل مریم بنت عمران وانها اذامرت فی الموقف نادی مناد من جهةِ العرش :یا اهل الموقف غضوا ابصارکم لتعبر فاطمة بنت محمد.

“फ़ातिमा आलमीन की औरतों की सरदार हैं। वह मरियम बिंते इमरान का दर्जा रखती हैं, वह जब मैदाने हश्र में से गुजरेंगी तो अर्श से एक मुनादी की आवाज़ बलन्द होगी : ऐ अहले महशर ! अपनी आँखें नीची कर लो ताकि फ़ातिमा बिंते मुहम्मद गुज़र जाएँ ।”

अल्लामा इब्ने सबाग़ मालिकी

नामवर आलिम इब्ने सबाग़ मालिकी कहते हैं: हम आप की चंद अहम ख़ुसूसियात, नसबी शराफ़त और ज़ाती ख़ूबियाँ बयान करते हैं: फ़ातिमा ज़हरा उस हस्ती की बेटी हैं जिस के बारे में यह आयत नाज़िल हुई: (सुबहानल्लज़ी असरी बि’बदा) पाक है वह ज़ात जो अपने बंदे को रात ओ रात ले गई। आप बेहतरीन इंसान की बेटी हैं और पाक ज़ाद हैं। अमीक़ नज़र रखने वाले उलमा का इस पर इजमाअ और इत्तेफाक़ है कि आप अज़ीम ख़ातून हैं।

(अल फसूल अल महमा, तबआ बेरुत, सफ़हा 3412)

हाफ़िज़ अबू नुअेम अस्फ़हानी

हुलयतुलऔलिया के मुसन्निफ़ मारूफ़ आलिम हाफ़िज़ अबू नुअेम अस्फ़हानी लिखते हैं, हज़रत फ़ातिमा बरगुज़ीदा नेकोकारों और मुंतख़ब परहेज़गारों में से हैं। आप सय्यिदा बुतूल, बज़अते रसूल और और औलाद में से आँहज़रत को सब से ज़ियादा महबूब और आँहज़रत की रहलत के बाद आप के ख़ानदान में से आप से जा मिलने वाली पहली शख़्सियत हैं। आप दुनिया और उस की चीज़ों से बेनियाज़ थीं।

आप दुनिया की पेचीदा आफ़ात व बलाया के असरार व रमूज़ से आगाह थीं।

(हुलियात अल-औलिया, तबअ बेरूत, जिल्द 2, सफ़हा 139)

अल्लामा तौफ़ीक़ अबू इल्म

उस्ताद तौफ़ीक़ अबू इल्म मिस्र के मुआसिर उलमा मुहक़्क़ीन में से हैं। उन्हों ने फ़ातिमा अल-ज़हरा के नाम से एक किताब लिखी है। इस में वह लिखते हैं :

"फ़ातिमा इस्लाम की तारीख़ साज़ शख़्सियतों में से हैं। इन की अज़मत, शान और बलन्द मर्तबा के बारे में यही काफ़ी है कि वह पैग़म्बरे आज़म की तन्हा दुख़्तर, इमाम अली इब्ने अबी तालिब की शरीके हयात और हसन व हुसैन की वालिदा हैं। दर हक़ीक़त रसूलुल्लाह के लिए राहते जाँ और दिल का सुरुर थीं । ज़हरा वही ख़ातून हैं कि करोड़ों इन्सानों के दिल जिन की तरफ झुकते हैं और जिन का नामे गिरामी ज़बान पर रेहता है। आप वही ख़ातून हैं जिन्हें आप के वालिद ने उम्मे अबीहा कहा। अज़मत और एहतेराम का जो ताज आप के वालिद ने अपनी बेटी के सर पर रखा, हम पर आप की तकरीम को वाजिब कर दिया है।"

अल्लामा आ'लूसी

आ'लूसी ने अपनी तफ़सीर रुहुल मआनी जिल्द 3, सफ़हा 138 पर

सूरह आले इमरान की आयत 42 के ज़ैल में तहरीर किया है कि "इस आयत से हज़रत ज़हरा सलामुल्लाहि अलयह पर हज़रत मरियम सलामुल्लाहि अलयह की बरतरी और फ़ज़ीलत साबित होती है बशर्ते कि इस आयत में "निसा अल आलमीन" से मुराद तमाम ज़मानों और तमाम अदवार (कई दौर) की ख़्वातीन मुराद हों मगर चूँ कि कहा गया है कि इस आयत में मुराद हज़रत मरियम عليها السلام के जमाने की औरतें हैं लिहाज़ा साबित है कि मरियम عليها السلام सय्यदा फ़ातिमा عليها السلام सलवातुल्लाहि अलयह पर फ़ज़ीलत नहीं रख़ती ।"

आ'लूसी लिख़ते हैं: रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया है :

إن فاطمة البتول ا فضل النسا المتقدمات و المتخرات

"फ़ातिमा बुतूल सलवातुल्लाहि अलयह पर तमाम गुज़िशता और आइंदा औरतों से अफ़ज़ल हैं ।"

आ'लूसी के बक़ौल "इस हदीष से तमाम औरतों पर हज़रत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लिाही अलयह की अफज़लीयत साबित होती है क्यूँकि सय्यिदा सलामुल्लिाही अलयह रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم की रूह और जान हैं, चुनांचे सय्यिदा फ़ातिमा सलामुल्लिाही अलयह सय्यिदा आयशा उम्मुल मोमिनीन عليها السلام पर भी बरतरी रख़ती हैं ।"

इमाम अल-सुहेली رحمة الله

अल-सुहेली रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم की मारुफ़ हदीष **"فاطمة بضعة منى"** "फ़ातिमत बज़अत मनी" का हवाला देते हुए किताब रोज़ अल-अनफ़ सफ़हा २७९ (मकतबुल कुल्लिय्यात अल-अज़हरी, मिस्र) में इस तरह रक़म तराज़ हैं लिख़ते हैं: **"मेरी राय में कोई भी (مكتب الكليات الازهرى مصر) "बज़अत अल-रसूल" से अफ़्ज़ल व बरतर नहीं हो सकता ।"**

इमाम अल-ज़रक़ानी رحمۃ اللہ علیہ

अल-ज़रक़ानी رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं: "जो राय इमाम अल मक़रीज़ी رحمۃ اللہ علیہ क़ुतुब अल-ख़फ़ीरी رحمۃ اللہ علیہ और इमाम अल-सुयूती رحمۃ اللہ علیہ ने वाज़े दलीलों की रोशनी में मुंतख़ब की है **यह है कि फ़ातिमा (सलामुल्लाही अलयह) हज़रत मरियम (सलामुल्लाही अलयह) समेत दुनिया की तमाम औरतों से अफ़्ज़ल व बरतर हैं।"**

(रौज़ुल-अनीफ़, जिल्द 1, सफ़हा 178)

अल्लामा अल-सफ़र ईनी رحمۃ اللہ علیہ

तहरीर किया है: **"फ़ातिमा उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा علیہا السلام (सलवातुल्लाही अलयह) से अफ़्ज़ल हैं, लफ़्ज़ सियादत की ख़ातिर और उसी तरह मरियम علیہا السلام से अफ़्ज़ल व बरतर हैं।"** (रैज़ुल अनीफ़, जिल्द 1, सफ़हा 178)

अल्लामा इब्ने अल-जकनी رحمۃ اللہ علیہ

इब्ने अल-जकनी رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं: **"सही तर क़ौल के मुताबिक़ फ़ातिमा सलामुल्लाही अलयह अफ़जलुन्नीसा हैं।"** (रौज़ुल अनीफ़, जिल्द 1, सफ़हा 178)

अल्लामा शेख़ अररिफ़ाई رحمۃ اللہ علیہ

अल्लामा अररिफ़ाई رحمۃ اللہ علیہ के इस क़ौल को इसी किताब में, इस तरह नक़ल किया गया है: "कि इसी क़ौल के मुताबिक़ मुतक़द्दीम अकाबिरीन और दुनिया के उलुमा व दानिश्वरों ने सही क़रार दिया है, **फ़ातिमा علیہا السلام तमाम ख़्वातीन से अफ़्ज़ल हैं।"**

डॉक्टर मुहम्मद सुलेमान फ़र्ज رحمۃ اللہ علیہ

मारुफ़ आलिम अहले सुन्नत तहरीर करते हैं कि फ़ज़ीलत फ़ातिमा सय्यिदतुन्नीसाईल आलमीन की फ़ज़ीलत को कोई दरक नहीं कर सकता इस लिए कि उन का मक़ाम बहुत बलन्द और उन की मंज़िलत बहुत अज़ीम है, वह

रसूले इस्लाम ﷺ का जुज़ हैं, इसी वजह से इमाम बुख़ारी رحمۃ اللہ ने आप के लिए रिवायत की है कि: **पयमबर ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा علیہا السلام मेरा जुज़ है जिसने फ़ातिमा को ग़ज़बनाक किए उस ने मुझे ग़ज़बनाक किया।**

(فی مناقب الزہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا سید احمد سایح حسینی مقدمہ ص ۱)

अबू बक्र जाबिर जज़ायरी رحمۃ اللہ

हज़रत ज़हरा علیہا السلام के फजाइल बहुत ज़्यादा हैं, उन ही में से एक इल्मे हज़रत ज़हरा علیہا السلام है, और वह क्यूँ आलिमा न हों जब कि वह उस रसूल ﷺ की बेटी हैं जो शहरे इल्म है, और वह रसूल ﷺ का जुज़ हैं।

(अल-इल्म वल उलमा, अबू बक्र जाबिर जज़ायरी सफ़हा 237)

डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी

मशहूर और मारूफ़ सुन्नी आलिमे दीन डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी अपनी किताब "**अद्दुररुल बयज़ा फी मनाक़िबी फ़ातिमतिज़्ज़हरा علیہا السلام**" में चार ख़्वातीन की फ़ज़ीलत से मुताल्लिक अहादीष का हवाला देते हैं और लिखते हैं: अहादीष में किसी क़िस्म का तआरुज़ (तसादुम) नहीं है क्यूँ कि दीगर ख़्वातीन यानी: मरियम, आसिया और ख़दीजा (सलवातुल्लाही अलयह पर) की अफ़्ज़लियत का ताअल्लुक उन के अपने ज़मानों से है यानी वह अपनी ज़माने की औरतों से बेहतर व बरतर थीं लेकिन हज़रत सय्यिदा आलमीन (सलवातुल्लाही अलयह पर) की अफ़्ज़लीयत आम और मुतलक़ है और पूरे आलम और तमाम ज़मानों पर मुश्तमिल (यानी जहां शुमूल और ज़मान शुमूल) है।"

सय्यिदा मरियम علیہا السلام पर सय्यिदा फ़ातिमा علیہا السلام की अफ़्ज़लीयत सुन्नी मुहद्दीसीन की निगाह में:

इस सहीह रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं :

سیدہ مریم پر سیدہ فاطمہ کی افضلیت سنی محدثین کی نگاہ میں:

"ऐ फ़ातिमा (सलामुल्लाही अलयह)! क्या आप ख़ुशनूद नहीं होंगी कि दुनिया की ख़वातीन की सरदार क़रार पाएँ और इस उम्मत की ख़वातीन की सय्यिदा क़रार पाएँ और बा ईमान ख़वातीन की सय्यिदा क़रार पाएँ ?"

(अल-मुस्तदरक, जिल्द 3, सफ़हा 156)

इमाम हाकिम رحمۃ اللہ और इमाम ज़हबी दोनों इस रिवायत को सही क़रार देते हैं। यह रिवायत हज़रत हव्वा علیہا السلام, उम्मुल बशर से लेकर क़यामत तक, दुनिया की तमाम औरतों पर हज़रत फ़ातिमा सलामुल्लाही अलयह की अफ़्ज़लियत की वाज़ह तरीन और मुह बोलती दलील है और इस रिवायत ने हर क़िस्म के ना दुरुस्त तसव्वुरात का इमकान ख़त्म कर के रख दिया है।

नीज़ रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ سय्यिदा सलवातुल्लाही अलयह से मुख़ातिब हो कर फ़रमाते हैं :

"لا ترضین نک سید نساء العالمین"

आप ख़ुशनूद नहीं हैं आप आलमीन की ख़वातीन की सरदार हैं ? सय्यिदा (सलवातुल्लाही अलयह) ने अर्ज़ किया: मरियम علیہا السلام का क्या होगा ? फ़रमाया:

"تلک سیدۃ نسا عالمھا"

वह अपने ज़माने की ख़वातीन की सरदार थीं।

(मुहम्मद शौकानी رحمۃ اللہ, फत्हुल क़दीर, बेरुत: दारुल मारुफ़, 1996 माह, जिल्द 1, सफ़हा 439)

अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ ने तवील हदीस में रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ से नक़ल किया है कि आप صلی اللہ علیہ وآلہ ने फ़रमाया: मेरी बेटी फ़ातिमा (सलवातुल्लाही अलयह) बेशक अव्वलीन से आख़रीन तक तमाम आलमीन की ख़वातीन की सरदार हैं। (इब्राहीम जवीनी, फरायyुस्समतीन, जिल्द 2, सफ़हा 35)

नीज़ एक तूलानी हदीष के ज़मन में पैग़म्बरे ख़ुदा صلی اللہ علیہ وآلہ ने फ़रमाया..... **चौथी मर्तबा ख़ुदा ने नज़र डाली और फ़ातिमा علیہا السلام को पूरे आलम की ख़वातीन**

पर पसनदीदा और अफ़्ज़ल क़रार दिया।

(सुलेमान कंदोज़ी, यनाबिउल मवद्दा, सफ़हा 247, बाब 56)

इब्ने अब्बास ﷺ पैग़म्बरे ख़ुदा ﷺ से रिवायत करते हैं:

"اربع نسوة سيدات عالمهن. مريم بنت عمران، و آسيه بنت مزاحم، و خديجه بنت خويلد، و فاطمة بنت محمد و افضلهن عالِما فاطمة".

"चार ख़वातीन अपने ज़माने की दुनिया की सरदार हैं: मरियम बिंते इमरान ﷺ, आसिया बिंते मज़ाहिम ﷺ (ज़ौजा फ़िरऔन), ख़दीजा बिंते ख़ुवैलद ﷺ, फ़ातिमा बिंते मुहम्मद ﷺ, और इन के दरमियान सबसे ज़्यादा आलिम हज़रत फ़ातिमा ﷺ (सलवातुल्लाही अलयह) हैं"

(अद्दुर्रुस मन्सूर, जिल्द 2, सफ़हा 194)

नीज़ इब्न-ए-अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"افضل العالمين من النساء الاولين و الآخرين فاطمة".

"अव्वलीन और आख़रीन की ख़वातीन में सबसे **अफ़्ज़ल ख़ातून फ़ातिमा (सलामुल्लाही अलयह) हैं।"**

(अल-मनाक़िबुल-मुरतजवी, सफ़हा 113)

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़ातिमा ज़हरा ﷺ के फ़ज़ाइल में चालीस अहादीष

हदीषे पाक में आता है कि जो चालीस हदीसें याद कर ले या किसी तरह से पहुंचा दे तो उस का शुमार उलमा में होगा। इसी लिए बरकर के लिए आख़िर में यह चहल हदीष शामिल कर दी हैं।

1

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: اذا كان يوم القيامة نادى مناد: يا أهل الجمع غضوا أبصاركم حتى تمر فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: क़यामत के दिन एक मुनादी निदा देगा कि ऐ मैदान-ए-हश्र के लोगो! अपनी निगाहें नीची कर लो ताकि फ़ातिमा ﷺ गुज़र सकें।

2

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: كنت اذا اشتقت الى رائحة الجنة شممت رقبة فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मुझे जन्नत की ख़ुश्बू का इश्तियाक़ होता है तो मैं फ़ातिमा ﷺ की गर्दन सूँघ लिया करता हूँ।

3

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: حسبك من نساء العالمين اربع : مريم وآسية وخديجة وفاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: दुनिया की ख़्वातीन में चार, मरियम ﷺ, आसिया ﷺ, ख़दीजा ﷺ और फ़ातिमा ﷺ तुम्हारे लिए काफ़ी हैं।

फूट प्रिंट

हदीषे पाक में आता है कि जो चालीस हदीषे याद करे या किसी तरह से पहुंचा दे तो उस का शुमार उलमा में होगा। इस लिए बरकत के लिए आख़िर में यह चहल हदीष शामिल कर दी है।

4

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: يا على هذا جبريل يخبرني ان الله زوجک فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ऐ अली عليه السلام ! यह जिबरईल عليه السلام हैं, मुझे उन्हों ने इत्तेलाअ दी है कि अल्लाह ने तुम्हारा निकाह फ़ातिमा عليها السلام से कर दिया है।

5

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: ما رضيت حتى رضيت فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब तक फ़ातिमा عليها السلام राज़ी न हो, मैं राज़ी नहीं हो सकता।

6

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: يا على ان الله امرني ان ازوجک فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ऐ अली عليه السلام ! अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं फ़ातिमा عليها السلام का निकाह तुम से कर दूँ।

7

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: ان الله زوج عليا من فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह ने अली عليه السلام का निकाह फ़ातिमा عليها السلام से किया है ।

8

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: كل بنى ام ينتمون الى عصبة ، الا ولد فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام की औलाद के अलावा हर माँ के बेटे अपने अस्बा से मनसूब होते हैं।

9

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: كل بنى انثى عصبتهم لأبيهم ما خلا ولد فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام की औलाद के अलावा हर औरत के बेटे अपने बाप के अस्बा से मनसूब होते हैं।

10

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: احب اهلى الى فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरे अहल में मुझे सब से ज़ियादा फ़ातिमा عليها السلام महबूब हैं।

11

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: خير نساء العالمين اربع : مريم وآسية و خديجة و فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: दुनिया की ख़्वातीन में चार, मरियम عليها السلام, आसिया عليها السلام, ख़दीजा عليها السلام और फ़ातिमा عليها السلام सब से अफ़ज़ल हैं।

12

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:سيدة نساء اهل الجنة فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जन्नती ख़्वातीन की सरदार फ़ातिमा عليها السلام हैं।

13

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:اذا اشتقت الى ثمار الجنة قبلت فاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मुझे जन्नत के फलों का इश्तियाक होता है, तो मैं फ़ातिमा عليها السلام को बोसा ले लेता हूँ।

14

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: كمل من الرجال كثير ولم يكمل من النساء الا اربع : مريم وآسية وخديجة وفاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मर्दों में कामिल तो बहुत गुज़रे हैं लेकिन औरतों में कामिल सिर्फ़ चार औरतें, मरियम عليها السلام, आसिया عليها السلام, ख़दीजा عليها السلام और फ़ातिमा عليها السلام हैं।

15

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:اول من يدخل الجنة:على وفاطمة .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जन्नत में सब से पहले अली عليه السلام और फ़ातिमा عليها السلام दाख़िल होंगे।

16

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:انزلت آية التطهير في خمسة في ، وفي علي وحسن وحسين وفاطمة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: आयत ततहीर सिर्फ़ मेरे अली عليه السلام, हसन عليه السلام, हुसैन عليه السلام और फ़ातिमा عليها السلام, चार के बारे में नाज़िल हुई है।

17

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:افضل نساء اهل الجنة: مريم وآسية وخديجة وفاطمة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जन्नती ख़वातीन में सब से अफ़्ज़ल मरियम عليها السلام, आसिया عليها السلام, ख़दीजा عليها السلام और फ़ातिमा عليها السلام हैं।

18

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:اول من دخل الجنة فاطمة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जन्नत में सब से पहले फ़ातिमा عليها السلام दाख़िल होंगी।

19

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:المهدى من عترتى من ولد فاطمة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेहदी ؑ मेरी इतरत, औलादे फ़ातिमा ؑ में से होंगे।

20

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:ان الله عزوجل فطم ابنتی فاطمة وولدها ومن احبهم من النار فلذلک سمیت فاطمة.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह ﷻ ने मेरी बेटी फ़ातिमा ؑ, उस की औलाद और उन से मोहब्बत करने वालों को जहन्नुम से दूर रखा है। इसी लिए उन का नाम फ़ातिमा ؑ है।

21

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة انت اول اهل بیتی لحوقا بی.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा ؑ ! तुम मेरे अहल में सब से पहले मुझ से मिलोगी।

22

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة منی، یریبنی ما رابها، ویو ذینی ما آذاها.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा ؑ मेरे दिल का टुकड़ा है, मुझे भी वही चीज़ परेशान करती है जो उसे करती है, मुझे भी वही चीज़ तकलीफ देती है जो उसे देती है।

23

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة مني يسرني ما يسرها .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, मुझे भी वही चीज़ ख़ुश करती है जो उसे करती है

24

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة سيدة نساء اهل الجنة .

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: فاطمہ جنتی عورتوں کی سردار ہے۔

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام जन्नती औरतों की सरदार है।

25

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة منى فمن اغضبها اغضبني .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, जिस ने उसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।

26

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة حوراء آدمية لم تحض ولم تطمث .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام इंसानी सूरत में जन्नत की हूर है।

27

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة خلقت حورية فى صورة انسية.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام इंसानी सूरत में जन्नत की हूर है, वह हैज़ व निफ़ास की गंदगी से पाक है।

28

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة منى يوذينى ما آذاها وينصبنى ما انصبها .

तर्जुमा: ररसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, मुझे भी वही चीज़ तकलीफ़ देती है जो उसे देती है, मुझे भी उसी चीज़ से दुख होता है जिस से उसे होता है।

29

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة منى يغضبنى ما يغضبها ويبسطنى ما يبسطها.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, जो चीज़ मुझे नाराज़ करती है, उसे भी करती है, जो चीज़ उसे ख़ुश करती है, मुझे भी करती है।

30

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة احب الى منک يا على وانت اعز على منها.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ऐ अली عليه السلام ! फ़ातिमा عليها السلام मुझे तुम से ज़ियादा महबूब है और तुम मुझे फ़ातिमा عليها السلام से ज़ियादा अज़ीज़ हो।

31

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة منى وهى قلبى وهى روحى التى بين جنبى.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, वह मेरा दिल है, वह मेरी रूह है जो मेरे पहलू में है।

32

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة سيدة نساء امتى.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरी उम्मत की ख़वातीन की सरदार है।

33

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة شجنة منى يبسطنى ما يبسطها ويقبضنى ما يقبضها.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, जो चीज़ उसे ख़ुश करती है, मुझे भी करती है, जो चीज़ मुझे नाराज़ करती है, उसे भी करती है।

34

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة مني يولمها ما يولمني ويسرني ما يسرها.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, मुझे भी वही चीज़ तकलीफ़ देती है जो उसे देती है, जो चीज़ उसे ख़ुश करती है, मुझे भी करती है।

35

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بضعة منى من آذاها فقد آذاني.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल का टुकड़ा है, जिस ने उसे अज़ीय्यत दी, उस ने मुझे अज़ीय्यत दी।

36

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة بهجة قلبى وابناها ثمرة فؤادى.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे दिल की ख़ुशी और उस के दोनों बेटे मेरे दिल का सुरूर हैं।

37

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة ليست كنساء الآدميين .

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام आम औरतों जैसी नहीं हैं।

38

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة مضغة منى يقبضنى ما قبضها ويبسطنى ما بسطها.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام मेरे जिगर का टुकड़ा है, जिस से उस का दिल तंग होता है, मेरा भी होता है और जिस से उसे फरहत मिलती है, मुझे भी मिलती है।

39

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة ان الله يغضب لغضبک.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام! अल्लाह جل جلاله भी तुम्हारे नाराज़ होने से नाराज़ होता है।

40

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم:فاطمة ان الله غير معذبک ولا أحد من ولدک.

तर्जुमा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: फ़ातिमा عليها السلام! अल्लाह جل جلاله न तुम्हें अज़ाब देगा, और न तुम्हारी किसी औलाद को अज़ाब देगा।
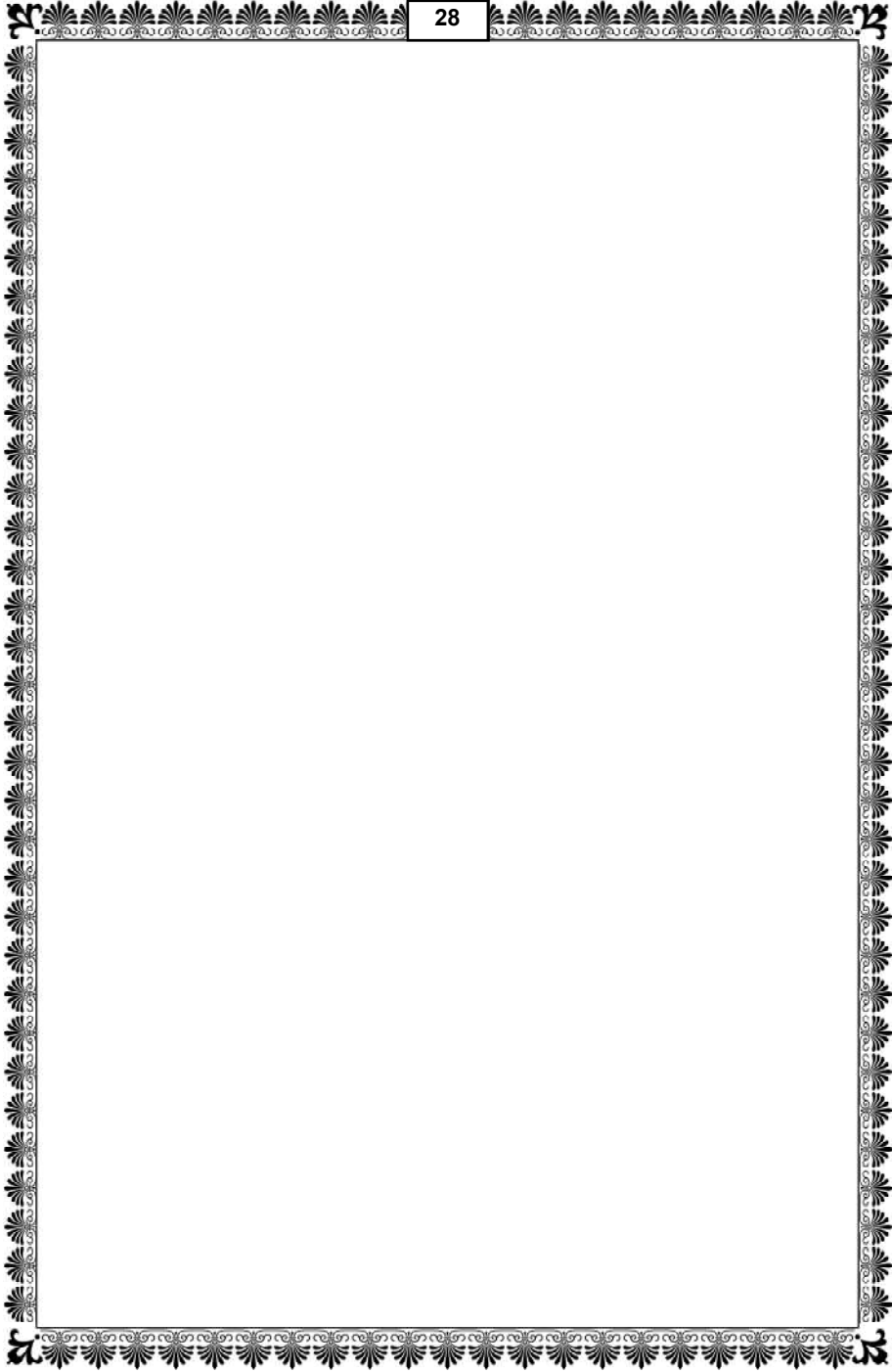
IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahl-e-Sunnat)

Founder & Chairman :

Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)

Mo. 85110 21786